प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि: एक वैचारिक अध्ययन

शीतल रस्तौगी[1] और प्रो० पूनम सिंह[2]

[1]शोध–छात्रा, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज मेरठ (उ० प्र०)

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ (उ० प्र०)

सारांश :– **प्राथमिक शिक्षा किसी भी शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला होती है, ठीक उसी प्रकार प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला होते हैं।शिक्षक छात्रों के विकास तथा राष्ट्रीय निर्माण के प्रमुख निर्माणकर्ता होते हैं।शिक्षकों की कार्य संतुष्टि शिक्षा की गुणवत्ता, छात्रों की उपलब्धि पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के क्रियान्वयन,डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग,समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने,प्रशासनिक दायित्वों में निरंतर वृद्धि तथा समाज की बदलती अपेक्षाओं ने शिक्षकों की कार्य–भूमिका को पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और चुनौतीपूर्ण बना दिया है।ऐसे परिवर्तित परिवेश में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है,क्योंकि शिक्षकों की यही संतुष्टि उनके शिक्षण की गुणवत्ता, व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। प्रस्तुत वैचारिक शोध–पत्र में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि की अवधारणा, उसके प्रमुख निर्धारकों तथा शिक्षण प्रक्रिया पर उसके प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करता है।यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसके अंतर्गत पुस्तकों, शोध–पत्रों,शोध–प्रबंधों तथा अन्य प्रामाणिक शैक्षणिक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं,तो वे अधिक कर्तव्यनिष्ठता, उत्साह, पूर्ण लगन, उत्पादकता और रचनात्मकता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं।जबकि अत्यधिक कार्यभार एवं प्रशासनिक दबाव असंतुष्टि के प्रमुख कारण हैं।यह शोध–पत्र उपलब्ध साहित्य का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए भविष्य के अनुसंधानों के लिए उपयोगी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।**

संकेत शब्द :– **प्राथमिक विद्यालय,शिक्षक,कार्य संतुष्टि**

I. प्रस्तावना

शिक्षक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य को शिक्षित करके समाज में फैलीं कुरूतियों को दूर करके सभ्य सकारात्मक विचारधारा वाले सशक्त समाज का विकास किया जाता है।मनुष्य को शिक्षित तथा सभ्य बनाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है,अतः शिक्षा के द्वारा मनुष्य समाज तथा राष्ट्रीय के विकास के लिए शिक्षक की नितांत आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक की महिमा को ईश्वर से भी ऊपर बताया गया है, जिसे कबीर दास जी के प्रसिद्ध दोहे द्वारा समझा जा सकता है –

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविंद दियो बताय॥

इस दोहे का अर्थ है कि यदि आपके सामने गुरु और भगवान (गोविंद) दोनों एकसाथ खड़े हों, तो आपको पहले गुरु के चरण छूने चाहिए, क्योंकि गुरु (शिक्षक) ने ही आपको ईश्वर तक पहुँचने का सही रास्ता बताया है।जीवन को सही राह दिखाने वाले गुरु का स्थान भगवान से भी ऊंचा माना गया है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक का स्थान प्रमुख है।शिक्षक न केवल व्यक्ति बल्कि राष्ट्रीय का निर्माणकर्ता होता है, जिसका महत्व सदैव बना रहता है। हमारे राष्ट्रीय को विरासत में मिली शिक्षा परंपरा विश्व में सबसे प्राचीन परंपरा है।**एच जी वेल्स** ने शिक्षकों के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है शिक्षक इतिहास का निर्माता होता है। इसी प्रकार की बातें **कोठारी आयोग** ने भी कहा है कि "राष्ट्र का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है और राष्ट्र निर्माण का यह पावन कार्य शिक्षक कर रहें हैं।"राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 में शिक्षकों को शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता एवं सुधार का केंद्रीय आधार माना गया है।नीति में शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, प्रेरणा, सहयोगात्मक कार्य–परिवेश तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है।वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा, समावेशी शिक्षा, नई शैक्षिक अपेक्षाओं तथा बढ़ती प्रशासनिक जिम्मेदारियों के कारण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विषय और अधिक प्रासंगिक हो गया है।ऐसे परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में यह समझना आवश्यक है कि कौन–से कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं और उनका शिक्षण की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

विगत वर्षों में कार्य संतुष्टि तथा उससे संबंधित विभिन्न चरों पर अनेक शोध किए गए हैं, जिनमें उनके पारस्परिक संबंधों का भी अध्ययन किया गया है। तथापि, प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संबंध में उपलब्ध वैचारिक साहित्य अपेक्षाकृत सीमित है। इसी शोध–अंतर को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत वैचारिक अध्ययन तैयार किया गया है।यह अध्ययन उपलब्ध साहित्य का समालोचनात्मक विश्लेषण करते हुए कार्य संतुष्टि की अवधारणा, उसे प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों तथा उनके पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करता है और इस क्षेत्र में भविष्य के अनुसंधानों के लिए एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

इस वैचारिक शोध पत्र में शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि तथा उससे सम्बन्धित कारकों का अध्ययन किया गया है।इसमें शिक्षकों की कार्य संतुष्टि तथा असंतुष्टि को समझने का प्रयास किया गया है।किसी भी संस्थान की सफलता तथा असफलता उसके शिक्षा को पर निर्भर करती है।चूंकि शिक्षण संस्थानों में भविष्य के लिए जिन नीतियों तथा योजनाओं का निर्माण किया जाता है उनका प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन शिक्षण संस्थान में कार्यरत शिक्षकों पर ही निर्भर होता है।यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होता है तो वह संस्थान द्वारा प्रदान किए गए किसी भी कार्य को पूर्ण लगन,उत्पादकता,कर्तव्यनिष्ठा तथा प्रभावी ढंग से करेगा।जिससे शिक्षक का संस्थान के प्रति योगदान

बढ़ेगा और संस्थान प्रतिस्पर्धा की रेस में अन्य संस्थाओं से आगे निकल जाएगा।शिक्षण संस्थान की सफलता में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।किसी भी शिक्षण संस्थान की सफलता काफी हद तक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर निर्भर करती है।कार्य संतुष्टि से आशय उस सुखद एवं सकारात्मक भावनात्मक अवस्था से है जो व्यक्ति को अपने कार्य अथवा कार्य अनुभव से प्राप्त होती है।कार्य संतुष्टि संप्रत्यय को और अधिक गहनता से समझने के लिए इसकी विभिन्न परिभाषाओं का अध्ययन आवश्यक है;

II. कार्य संतुष्टि की परिभाषा -

1. मनोवैज्ञान की लोंगमैन डिक्शनरी के अनुसार, कार्य संतुष्टि शिक्षकों (कर्मचारियों) की अपने कार्य के प्रति भावनात्मक अभिवृत्ति है,जो कार्य के प्रति उसकी पसंद या नापसंद को व्यक्त करती है।यह एक जटिल एवं बहु आयामी अवधारणा है जो अनेक कारकों जैसे- व्यक्तिगत कारक, प्रबंधात्मक कारक,सामाजिक कारक एवं संगठनात्मक कारक आदि से प्रभावित होती है।
2. लीज(1998) के अनुसार, कार्य संतुष्टि संस्थान में शिक्षक (कर्मचारी) द्वारा निभाई जा रही भूमिका के प्रति उसकी भावनात्मक अभिरुचि की मात्रा है।
3. लॉक(1976) के अनुसार, कार्य संतुष्टि वह सुखद एवं सकारात्मक भावनात्मक अवस्था है, जो व्यक्ति द्वारा अपने कार्य या कार्य अनुभव के मूल्यांकन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। यदि व्यक्ति अपने कार्य को पसंद करता है, तो वह उच्च स्तर की कार्य संतुष्टि अनुभव करता है,जबकि यदि वह अपने कार्य से असंतुष्ट है, तो कार्य असंतोष (Job Dissatisfaction) उत्पन्न होता है।
4. अर्नोल्ड एवं फील्डमैन के अनुसार,कार्य संतुष्टि शिक्षकों की अपने कार्य के प्रति सकारात्मक एवं नकारात्मक धारणाओं का समग्र रूप है।
5. डेविस एवं न्यूस्ट्रोम के अनुसार, कार्य संतुष्टि शिक्षकों की अपने कार्य के प्रति भावनात्मक अभिरुचि तथा उसे प्राप्त होने वाली प्रेरणा का परिणाम है।
6. डेविस और लाफॉस्ट (1984) के अनुसार,कार्य संतुष्टि वह स्थित है जिसमें शिक्षक यह अनुभव करता है कि उसका कार्य वातावरण उसकी आवश्यकताओं को किस सीमा तक पूर्ण कर रहा है।
7. हॉपॉक (1935) के अनुसार, कार्य संतुष्टि व्यक्ति के कार्य—अनुभव से उत्पन्न होने वाली वह संतोषजनक मनोवैज्ञानिक अवस्था है, जो अनुकूल कार्य—परिस्थितियों, शारीरिक सुविधाओं तथा सकारात्मक कार्य—परिवेश के परिणामस्वरूप विकसित होती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि— कार्य संतुष्टि के शिक्षकों के अपने कार्य के प्रति सकारात्मक,भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है।जो उसकी आवश्यकताओं अपेक्षाओं एवं कार्य अनुभवों की पूर्ति पर आधारित होती है।कार्य संतुष्टि एक बहुआयामी दृष्टिकोण है,जिसका मुख्य संबंध शिक्षक की भावनाओं,विचारों और दृष्टिकोण से होता है या व्यक्ति अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए जिस अभिवृत्ति में रहता है उसे कार्य संतुष्टि के रूप में परिभाषित किया गया है।

III. कार्य संतुष्टि के प्रमुख सिद्धांत

1. हॉथोर्न अध्ययन— एल्टन मेयो द्वारा वर्ष 1924—1933 के मध्य किए गए हॉथोर्न अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कार्य परिस्थितियों में किए गए परिवर्तन कर्मचारियों की उत्पादकता एवं कार्य निष्पादन को अस्थायी रूप से प्रभावित करते हैं।इस घटना को हॉथोर्न प्रभाव (Hawthorne Effect) कहा जाता है।शिक्षा के क्षेत्र में यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि शिक्षण संस्थान की अनुकूल कार्य वातावरण एवं परिस्थितियां शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कार्यकुशलता में सकारात्मक वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रम सिद्धांत (Maslow's Hierarchy of Needs) –
अब्राहम मैस्लो(1954) ने मानव आवश्यकताओं को पाँच स्तरों में वर्गीकृत किया है;
1.शारीरिक आवश्यकताएँ (Physiological Needs)
2.सुरक्षा की आवश्यकताएँ (Safety Needs)
3.सामाजिक आवश्यकताएँ (Social Needs)
4.सम्मान की आवश्यकताएँ (Esteem Needs)
5.आत्म—साक्षात्कार की आवश्यकताएँ (Self & Actualization Needs)

शिक्षण के संदर्भ में, जब शिक्षकों की शारीरिक, सुरक्षा, सामाजिक, सम्मान तथा आत्म—साक्षात्कार संबंधी आवश्यकताओं की क्रमिक एवं समुचित पूर्ति होती है, तब वे अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्ट, प्रेरित एवं प्रतिबद्ध होते हैं, जिससे उनके कार्य निष्पादन की गुणवत्ता में सकारात्मक वृद्धि होती है।

3. हर्जबर्ग का द्विकारक सिद्धांत (Herzberg's Two & Factor Theory)–
फ्रेडरिक हर्जबर्ग ने कार्य संतुष्टि को दो प्रकार के कारकों से प्रभावित माना है, जो इस प्रकार हैं,प्रेरक कारक (Motivational Factors) तथा स्वच्छता कारक (Hygiene Factors)

i. प्रेरक कारक (Motivational Factors):
प्रेरक कारकों में उपलब्धि (Achievement), कार्य का स्वरूप (Nature of Work), मान्यता (Recognition), उत्तरदायित्व (Responsibility), पदोन्नति (Promotion) तथा उन्नति के अवसर (Growth Opportunities) सम्मिलित हैं।ये कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि तथा कार्य निष्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ii. स्वच्छता कारक (Hygiene Factors):
स्वच्छता कारकों में वेतन (salary), संगठन की नीतियाँ (Organizational Policies),प्रशासन (Administration),पर्यवेक्षण (supervision),कार्य परिस्थितियाँ (Working Conditions) तथा सहकर्मियों के साथ संबंध (Interpersonal Relation) सम्मिलित हैं। इन कारकों की अनुपस्थिति शिक्षकों में कार्य असंतोष उत्पन्न करती है, जबकि इनकी समुचित उपलब्धता कार्य असंतोष को कम करने में सहायक होती है।
शिक्षा के संदर्भ में, यदि शिक्षकों को प्रेरक एवं स्वच्छता दोनों प्रकार के कारकों की समुचित उपलब्धता प्राप्त होती है, तो उनकी कार्य संतुष्टि तथा कार्य निष्पादन की गुणवत्ता में सकारात्मक वृद्धि होती है।

IV. कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

विभिन्न शोध अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इन कारकों को मुख्यतः तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं

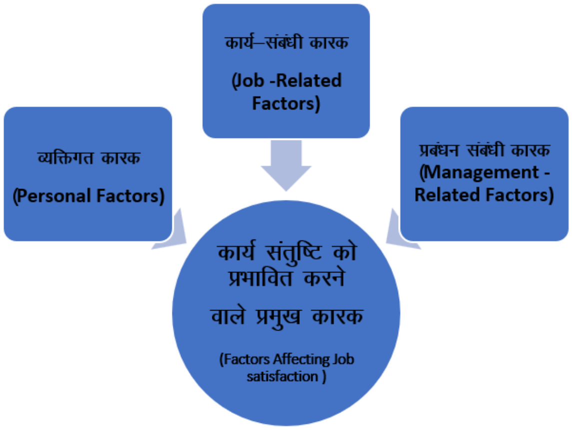

1. व्यक्तिगत कारक (Personal Factors)

लिंग, आयु, बुद्धि, शैक्षिक योग्यता,वैवाहिक स्थिति तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व जैसे व्यक्तिगत कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

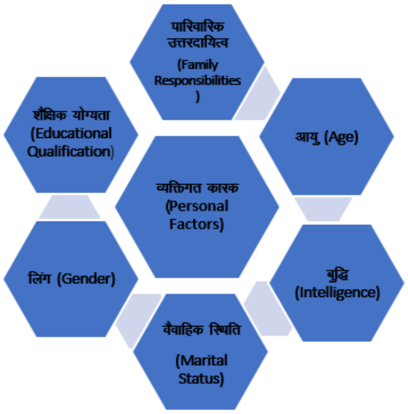

2. कार्य–संबंधी कारक (Job -Related Factors)

कार्य की प्रकृति, कार्यभार,कार्य में रुचि, भौगोलिक स्थिति, संस्थान का आकार, कार्य की चुनौती एवं कार्य की स्पष्टता,व्यावसायिक स्थिति, अनुकूल कार्य वातावरण, उपलब्धियों की मान्यता तथा प्रशंसा आदि कार्य–संबंधी कारक कार्य
संतुष्टि के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।

3. प्रबंधन संबंधी कारक (Management -Related Factors)-

वेतन एवं अन्य आर्थिक लाभ(Salary),पदोन्नति की नीतियाँ(Promotion Policy),कार्य सुरक्षा (Job Safety),कार्य परिस्थितियाँ (Job Conditions),नेतृत्व शैली(Leadership Style),प्रशासनिक सहयोग(Administrative Support),प्रबंधन की नीतियाँ (Management Policies),निर्णय लेने में सहभागिता (Participation in Decision and Making), पर्यवेक्षण(Supervision), निष्पक्षता एवं पारदर्शिता(Fairness and Transparency),पदोन्नति नीति(Promotion Policy) ,संसाधनों की उपलब्धता (Availability of Resources),संगठनात्मक वातावरण (Organizational Climate),प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास के अवसर, सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण तथा निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में सहभागिता जैसे प्रबंधन संबंधी कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

यह सभी कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।यदि शैक्षणिक संस्थान इन कारकों पर थोड़ी सी दूरदर्शिता तथा तत्परता के साथ इनकी उपलब्धता एवं गुणवत्ता पर ध्यान दें तो शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि करना कोई कठिन कार्य नहीं होगा।इस प्रकार, ये सभी कारक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को बढ़ाने तथा शिक्षण संस्थान के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य–
इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न शोध अध्ययनों के आधार पर कार्य संतुष्टि की अवधारणा एवं उसे प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का अध्ययन करना है।

अध्ययन की कार्यप्रणाली
यह शोध–पत्र द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित एक वैचारिक अध्ययन है। अध्ययन हेतु आवश्यक शोध सामग्री का संकलन विभिन्न विश्वसनीय ऑनलाइन शैक्षणिक स्रोतों जैसे : Google Scholar, Shodhganga, ResearchGate, Academia-edu, UGC & CARE एवं अन्य शोध–पत्रिकाओं से किया गया है। साथ ही, विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध–पत्रों, शोध–प्रबंधों एवं अन्य साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

V. साहित्य समीक्षा

चौधरी एवं भट्टाचार्य (2016)में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) के अंशकालिक तथा पूर्णकालिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय के पूर्ण कालिक, शिक्षक अंशकालिक शिक्षकों की तुलना में अधिक कार्य संतुष्ट समायोजित तथा मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ पाए गए।पटेल एवं जोशी (2016) ने माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया।अध्ययन के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि शासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर अशासकीय विद्यालयों में कार्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक था जबकि पुरुष और महिला शिक्षकों कार्य संतुष्टि के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।गोयल (2017) ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया।शोध पत्र के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि निजी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से अधिक पाई गई।पाराशर और शर्मा (2017) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं मानसिक स्वास्थ्य है का संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उत्तर माध्यमिक राजकीय विद्यालय के शिक्षक बेहतर कार्य परिस्थितियों,वेतन,सुविधाओं और सुरक्षा पाने के कारण निजी विद्यालय के शिक्षकों से अधिक संतुष्ट पाए गए।लिंग के आधार पर तुलना करने पर महिला तथा पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में अंतर कम पाया गया। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्ट पाए गए जबकि निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक अपने कार्य के प्रति असंतुष्ट पाए गए।दादर और मित्तल (2018) में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया।निष्कर्ष रूप में पाया गया कि महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पुरुष शिक्षकों से अधिक पाई गई।सरकारी विद्यालयों के महिला पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान पाई गई जबकि निजी विद्यालयों में महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पुरुष शिक्षकों से अधिक पाई गई। निजी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों से अधिक पाई गई।निजी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरुष से अधिक पाई गई। निजी विद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों से अधिक पाई गई।कुमारी एवं सिरोला (2020) ने राजकीय विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों के कार्य संतुष्टि,कार्य दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया।इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के कार्य संतुष्टि एवं मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग,आयु,अनुभव,क्षेत्र और शासन की योग्यता का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।अधिक अनुभव और आयु वाले अध्यापकों में कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई। कम योग्यता वाले अध्यापक अधिक योग्यता वाले अध्यापकों की तुलना में अधिक संतुष्ट पाए गए। कुरैशी एवं अन्य (2022) में उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों में कार्य संतुष्टि के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया।इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि कार्य संतुष्टि और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच उच्च सकारात्मक तथा सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया अर्थात जिन शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर उच्च था उनकी शिक्षक प्रभावशीलता भी उच्च पाई गई तथा जिन शिक्षकों की कार्य संतुष्टि निम्न स्तर की थी उनकी शिक्षक प्रभावशीलता भी निम्न स्तर की पाई गई।थपलियाल एवं जोशी (2023) में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का उनके कार्य संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन किया। इस शोध पत्र के निष्कर्ष रूप में पाया गया की कार्य संतुष्टि और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।जिन शिक्षकों के कार्य संतुष्टि अधिक थी उनकी प्रभावशीलता भी अधिक पाई गई।कुमारी एवं शुक्ला(2025) में मधुबनी जिले के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापकों के कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया।इस शोध पत्र के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।जे. यू. और अन्य (2025) ने विद्यालय में उपलब्ध मानसिक स्वास्थ्य सहायता के संदर्भ में शिक्षण कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि विद्यालय में उपलब्ध मानसिक स्वास्थ्य सहायता एवं शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के बीच सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।मुजिताफा(2026) में केब्बी राज्य के शिक्षा महाविद्यालय में रिमोट कार्य का शिक्षकों की उत्पादकता और कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि रिमोट कार्य , कार्य संतुष्टि और शिक्षकों की उत्पादकता के बीच सार्थक सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। जिससे स्पष्ट होता है कि जो शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं उनकी उत्पादकता भी अधिक पाई गई।

VI. प्रमुख शोध निष्कर्ष

साहित्य समीक्षा के अध्ययन के विश्लेषण से है स्पष्ट होता है कि कार्य संतुष्टि शिक्षकों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिसका प्रभाव शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षक प्रभावशीलता,कार्य निष्पादन तथा उत्पादकता पर पड़ता है। अधिकांश अध्ययनों में कार्य संतुष्टि का मानसिक स्वास्थ्य एवं शिक्षक प्रभावशीलता के साथ सकारात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। जिन शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर उच्च था वह मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ पाए गए तथा उनकी शिक्षक प्रभावशीलता भी अधिक पाई गई।
समीक्षा से है भी ज्ञात हुआ कि कार्य संतुष्टि अनेक कारकों से प्रभावित होती है जिनमें वेतनमान,कार्य अनुभव,कार्य स्थिति,पदोन्नति के अवसर,आयु,विद्यालय के प्रकार आदि प्रमुख हैं। सरकारी तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संबंध में विभिन्न परिणाम प्राप्त हुए।
इसी प्रकार लिंग के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों में अंतर नहीं पाया गया।जबकि कुछ अध्ययनों में महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पुरुष शिक्षकों से अधिक पाई गई।

नवीन शोध अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विद्यालय में उपलब्ध मानसिक स्वास्थ्य सहायता,रिमोट कार्य एवं उत्पादकता के साथ भी सकारात्मक सहसम्बन्ध है।

अंततः उपरोक्त समीक्षा के आधार पर कहा जा सकता है कि कार्य संतुष्टि न केवल शिक्षकों के विकास का आधार है वरन शैक्षिक गुणवत्ता, शिक्षक प्रभावशीलता,मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण निर्धारक अंग है।अतः प्रत्येक संस्था को ऐसा सकारात्मक सहयोगात्मक वातावरण विकसित करना चाहिए जिससे शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि हो। शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि के लिए उचित वेतनमान,कार्य परिस्थितियों,कार्य वातावरण,पदोन्नति के अवसर, आदि का विकास आवश्यक है।यद्यपि इस विषय पर अनेक अध्ययन किया जा चुके हैं फिर भी बदलती हुई शैक्षिक परिस्थितियों नीतियों को देखते हुए इस क्षेत्र में अभी अध्ययन की और आवश्यकता है।

इस वैचारिक शोध पत्र अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. कार्य संतुष्टि एक बहुआयामी (Multidimensional) अवधारणा है, जो व्यक्ति की भावनाओं, दृष्टिकोण तथा अनुभवों से संबंधित है।
2. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि संगठन की उत्पादकता, कार्य निष्पादन तथा कार्य की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।
3. कार्य संतुष्टि का सीधा संबंध शिक्षकों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य से है।
4. वेतन के अतिरिक्त पदोन्नति, सम्मान, उत्तरदायित्व, कार्य का स्वरूप तथा कार्यस्थल का वातावरण भी कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।
5. शिक्षकों की व्यक्तिगत विशेषताएँ, जैसे आयु, लिंग, अनुभव, शिक्षा तथा अन्य जनसांख्यिकीय कारक भी कार्य संतुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
6. कार्य संतुष्टि के प्रमुख सिद्धांत कार्य संतुष्टि की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] दादर,हि. और मित्तल,क. (2018). माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की मानसिक स्वास्थ्य एवं कार्य संतुष्टि के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन.पीएच.डी.,शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान. Https://hdl.handle.net/10603/279334

[2] पाराशर,वि और शर्मा,स.(2017). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं मानसिक स्वास्थ्य का संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में अध्ययन.पीएच.डी.,शिक्षा शास्त्र,वनस्थली विद्यापीठ,राजस्थान https://hdl.handle.net/10603/191603

[3] कुमारी,अं. और सिरौला,मी.(2020). राजकीय विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों के कार्य संतुष्टि, कार्य दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. पीएच.डी., शिक्षा संकाय ,वनस्थली विद्यापीठ राजस्थान, https://hdl.handle.net/10603/360412

[4] गोयल रंजन 2017 प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन.इंटरनेशनल जनरल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च,वॉल्यूम-3,इश्यू-1,नवंबर-दिसंबर,2017, पे.सं. :59-63 https://www.allresearchjournal.com/archives/2017/vol3issue1/partA/6-11-53-752.pdf

[5] चौधरी,सु.कू. एवं भट्टाचार्य जे.सी.(2016).कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.)के अंशकालिक तथा पूर्णकालिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि ,समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन.पीएच.डी., शिक्षा संकाय,काशी हिंदू विश्वविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी https://hdl.handle.net/10603/268177

[6] कुमारी, रंजना एवं शुक्ला ,धर्मेंद्र(2025). मधुबनी जिले के प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस्ड रिसर्च एंड मल्टी डिसीप्लिनरी ट्रेंड्स, वॉल्यूम-2,इश्यू-3, जुलाई-सितंबर 2025, पे. नं. :187-202, ISSN: 304 89458, https://ijarmt.com/index.php/j/article/ view/375/ 270

[7] पटेल, निलेश कुमार. (2015). माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. अन्वेषिका: अध्यापक शिक्षा की शोध पत्रिका, 10(3), 15–21. https://www.researchgate.net/publication/376851080_madhyamika_vidyalayom_mem_karyarata_siksakom_ki_karya_santusti_ka_tulanatmaka_adhyayana

[8] कुरैशी, जी. यू. डी., अम्बर, एफ. ए., एवं जान, टी. (2022). जॉब सैटिस्फैक्शन इन रिलेशन टू टीचर इफेक्टिवनेस अमंग हायर सेकेंडरी स्कूल टीचर्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज़ इन इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट (IJAEM), 4(5), 469–474. https://doi.org/10.35629/5252-0405469474

[9] कुमार, स., राणा, एस., एवं थपलियाल, प. (2024). Teaching effectiveness of secondary school teachers teaching in different types of school management. International Journal of Research Publication and Reviews, 5(1), 5796–5798. https://doi.org/10.55248/gengpi.5.0124.22249

[10] यू. जे., गीयरस्टैंगर, एस., एवं सोलीमनपोर, एस. (2025). सपोर्टिंग दोज़ हू सपोर्ट:टीचर जॉब सेटिस्फेक्शन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ स्कूल मेंटल हेल्थ सपोर्ट लीडरशिप एंड पॉलिसी इन स्कूल एडवांस्ड ऑनलाइन पब्लिकेशन. https://doi.org/10.1080/15700763.2025.2581587

[11] मकेरा, एफ. एम. (2026). Effects of Remote Work on Employee Productivity and Job Satisfaction in Colleges of Education, Kebbi State. International Journal of Entrepreneurship, Business Strategy and Research, 2(1). https://journals.iempsglobal.org/index.php/IJEBSR/article/view/294